ISSN2393-8838

Date of Publishing 19th June Vol. No.37 Issue No.06

JUNE 2026

Rs.10/-

मासिक

इसलाहे समाज

समाज सुधारक पत्रिका

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान को जो भी, थकान, बीमारी रंज व गम, तकलीफ पहुचती है यहां तक कि कांटा चुभता है तो अल्लाह इसकी वजह से उसके गुनाहों को मिटा देता है। (सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम)

हर बिदअत गुमराही है

मुहम्मद अजहर मदनी

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो व्यक्ति इस्लाम में कोई ऐसी चीज ईजाद करे और शामिल करे जो हमारी शरीअत का हिस्सा न हो, वह रद्द (अस्वीकार्य) है। (सहीह मुस्लिम) शरीअत यह है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उसवा (जीवन-आदर्श) के अनुसार बिना किसी कमी-बेशी के जीवन व्यतीत किया जाए। इसमें किसी प्रकार की वृद्धि न की जाए, क्योंकि इस्लाम एक पूर्ण जीवन-पद्धति और व्यवस्था है जो हमारे लिए दुनिया और आखिरत दोनों में सफलता और कल्याण की गारंटी है। इसके बावजूद हमारे समाज में बिदअत का चलन इतना अधिक हो गया है कि लोग वास्तविक शरीअत को छोड़कर अंधविश्वासों और मनगढ़ंत बातों पर विश्वास करने लगे हैं। ऐसे लोगों को इस्लाम की शिक्षाओं से परिचित कराने और उन पर अमल करने की प्रेरणा देने की आवश्यकता है, क्योंकि हर बिदअत इंसान को गुमराही की ओर ले जाती है। अल्लाह के रसूल ने फरमायाः

हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है। इस हदीस से अंदाजा लगाया जा सकता है कि बिदअत कितनी खतरनाक है कि वह इंसान को जहन्नम में पहुँचा देती है। स्पष्ट बात है कि जिन कार्यों का शरीअत से कोई संबंध न हो, वे इंसान की मुक्ति और सफलता का माध्यम कैसे बन सकते हैं? जबकि इंसान की सफलता और मुक्ति का आधार कुरआन और हदीस का अनुसरण है।

कुरआन और सुन्नत की स्पष्ट शिक्षाओं के होते हुए किसी अन्य व्यक्ति की बातों का अनुसरण करना खुली गुमराही है। अल्लाह के रसूल अपने प्रत्येक खुत्बे में बिदअत की विनाशकारी और बुराइयों से आगाह किया करते थे। खुत्बा-ए-मसनूना में आपने बिदअत को गुमराही का कारण बताया है।

चाहे इमामुल मुहद्दिसीन इमाम बुखारी का दौर हो, इमाम मुस्लिम का, इमाम तिर्मिजी का, इमाम अबू हनीफा का, इमाम अहमद बिन हम्बल का, इमाम शाफई का या इमाम मालिक रहमातुल्लाही अलैहिम का, किसी के समय में दोनों ईदों (ईदुल फित्र और ईदुल अजहा) के अतिरिक्त कोई तीसरी ईद नहीं मनाई जाती थी। इसी प्रकार मुहर्रम और सफर के महीनों में सवाब की नीयत से कोई अतिरिक्त धार्मिक कार्य किए जाने का प्रमाण नहीं मिलता, जैसा कि आजकल कुछ लोग मुहर्रम के महीने में खुशी या गम के नाम पर कुछ विशेष कर्म करते हैं।

सहाबा के दौर में भी मुहर्रम और सफर के महीनों में धार्मिक आदेशों के नाम पर प्रचलित मातम आदि का कोई अस्तित्व नहीं था। बल्कि अल्लाह के रसूल ने इन महीनों के संबंध में अरबों के बीच प्रचलित अशुभता और बदशगूनी की मान्यताओं का खंडन किया और स्वयं उन कार्यों को करके तथा दूसरों को प्रेरित करके बताया, जिन्हें लोग अशुभ समझते थे। सारांश यह है कि हर वह कार्य जो इस्लाम में बिदअत को बढ़ावा देता है और गुमराही की ओर ले जाता है, उससे बचने की इस्लाम ने सख्त ताकीद की है। अल्लाह के रसूल अपने खुत्बों में हर बिदअत को गुमराही करार देते थे। कुछ स्थानों पर देखा गया है कि ईदुल अजहा और अन्य अवसरों पर जानवरों की कुर्बानी करते समय उन्हें नहलाया-धुलाया जाता है और यहाँ तक कि उनका वुजू भी कराया जाता है, जबकि जानवर इन धार्मिक आदेशों के पालन के लिए पाबन्द नहीं हैं। इस कार्य को लोगों के सामने बड़े अच्छे तरीके से प्रस्तुत किया जाता है ताकि आम जनता भी यह समझे कि जानवर को नहलाना-धुलाना चाहिए, जबकि शरीअत में ऐसे कार्यों का कोई प्रमाण नहीं है। इसलिए हम सभी मुसलमानों को केवल उन्हीं आदेशों पर अमल करना चाहिए जो कुरआन और सुन्नत से प्रमाणित हों।

मासिक
इसलाहे समाज
जून 2026 वर्ष 37 अंक 6
जुलहिज्जा 1447 हिजरी

संरक्षक
असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक
मुहम्मद ताहिर

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क
मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90
मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद ताहिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।
सम्पादक: मुहम्मद ताहिर
लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	हर बिदअत गुमराही है	02
2.	सऊदी अरब के अभूतपूर्व कारनामे	04
3.	अल्लाह का अर्थ	06
4.	सभाओं के शिष्टाचार	10
5.	हज़रत मुहम्मद स० के आचार-विचार...	14
6.	सफर में जाने से पहले और सफर के बाद के अहकाम	15
7.	पवित्र कुरआन की तिलावत की फज़ीलत	16
8.	इमाम बुखारी रह० की दियानतदारी	17
9.	ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स० की शिक्षाएं	19
10.	जमाअती ख़बरें	22
11.	मानवता का सम्मान और विश्व-धर्म(११)	24
12.	अपील	27
13.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- www.ahlehadees.org

सम्पादकीय

सऊदी अरब के अभूतपूर्व कारनामे हज २०२६ के परिदृष्य में

मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

यूँ तो सऊदी अरब इस्लाम की सेवा, प्रचार व प्रसार, शिक्षा व प्रशिक्षण, कल्याणकारी प्रोजेक्टों, मानवीय सहायता, राहत गतिविधियाँ, अम्न व सुरक्षा और विश्व स्तर पर शुभचिंतन के असंख्य कारनामों के लिये प्रसिद्ध है लेकिन हाजियों की सेवा के अध्याय में उसे जो विशिष्टता प्राप्त है वह अपनी मिसाल आप है। हर साल लाखों बल्कि अधिकांश करोड़ों इन्सान दुनिया के विभिन्न भागों से इस पवित्र धरती पर जाते हैं और इन सबके लिये रहन सहन, खाने पीने, ट्रांस्पोर्ट, स्वास्थ्य और इबादत के लिये सुगम वातावरण का प्रबन्ध करना एक ऐसा महान कारनामा है जिसकी कल्पना आम इन्सानी अक्ल के लिये आसान नहीं है लेकिन अल्लाह तआला की तौफीक़, निःस्वार्थता और निरन्तर पलानिंग के नतीजे में सअदी अरब इस कर्तव्य को जिस कामयाबी के साथ अंजाम देती है, वह प्रशंसनीय है।

इस वर्ष हज के अवसर पर सऊदी अरब ने जिन असाधारण प्रबन्ध, आधुनिक सुविधाएँ और नये अविष्कारों का प्रदर्शन किया उसने पूरी दुनिया को अचंभे में डाल दिया। यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि हज २०२६ तकनीकी विकास, मानव सेवा और दीनी जजबे का एक ऐसा खूबसूरत मिश्रण था जिस की मिसाल आधुनिक युग में मुश्किल से मिल सकती है। सऊदी अरब के जिम्मेदारान बारहा यह बात दोहराते रहे हैं कि जिस दिन एक हज ख़तम होता है उसी दिन से अगले हज की तैयारी शुरू हो जाती है। हज व उमरा मंत्रालय, ग्रह मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय, दीनी मामलात मंत्रालय, हरमैन शरीफ़ैन की प्रबन्धन कमीटियाँ, सिकोर्टी फोरसेज़, म्यूनसपलटी, कम्यूनिकेशन विभाग और हज़ारों माहिरीन साल भर इसी चिंता में व्यस्त रहते हैं कि अगले साल हज को और ज़्यादा बेहतर सुरक्षित आरामदेह और मिसाली बनाया जाये यानी कि उनकी सोच पलानिंग और उनकी दिन व रात की मेहनत का केन्द्र यही होता है कि हाजियों को किस तरह से ज़्यादा से ज़्यादा सुहूलत, राहत और सुख उपलब्ध कराया जाये।

इस साल हज के प्रबन्धन में आधुनिक टेक्नालोजी को जिस अन्दाज़ से प्रयोग किया गया वह ध्यान देने योग और अनुसरणीय है। ए आई, स्मार्ट निगरानी, आधुनिक डिजीटल व्यवस्था, हज़ारों केमरों और सेन्सर्ज़

पर आधारित निगरानी की व्यवस्था, बायो मेटरिक आई डी और नुसुक कार्ड के व्यापक स्तेमाल ने प्रबन्ध के मामलात को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया। हाजियों के ट्रांसपोर्ट, भीड़ के दबाव की निगरानी और हंगामी हालात में तुरन्त कार्रवाई के ऐसे संसाधन प्रयोग किये गये जिन्होंने हज के प्रबन्धन स्तर को और ज़्यादा प्रभावी बना दिया।

हज २०२६ भीषण गर्मी के मौसम में अदा किया गया लेकिन सऊदी अरब ने हाजियों को गर्मी की शिद्दत से बचाने के लिये जो इकदामात किये वह वास्तव में सराहनीय हैं। मिना, अरफात, और जमरात के इर्द गिर्द विस्तार सायेदार मक़ामात, ठंडक पहुंचाने वाली आधुनिक व्यवस्था, पानी की फुवार छोड़ने वाले आलात, लगातार ठंडे पानी की उपलब्धता, हज़ारों वाटर प्वाइंट्स और पैदल चलने वालों के लिये आरामदायक रास्तों का प्रबन्ध किया गया। जगह जगह ठंडे पानी के प्याऊ, विश्रामालय और स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किये गये ताकि कोई हाजी गर्मी की शिद्दत से प्रभावित न हो। इस साल बाज़ जगहों पर आधुनिक टेक्नालोजी संसधानों के द्वारा वातावरण को संतुलित बनाने की कोशिशों ने भी लोगों को अचंभित किया और हाजियों ने इन सुंविधाओं से फायदा उठाया।

हक़ीक़त यह है कि अगर इन्सान ईमानदारी से हज २०२६ के प्रबन्ध की समीक्षा करे तो वह इस परिणाम पर पहुंचता है कि यह केवल संसाधनों का कमाल नहीं बल्कि संकल्प, निःस्वार्थता, निरन्तर पलानिंग और अल्लाह तआला की विशेष क्षमता का परिणाम है इस बंजर जगह में जहां कभी पानी और बुनियादी आवश्यकताओं की कल्पना भी दुश्वार था आज दुनिया भर से आने वाले लाखों इन्सानों के लिये उच्च स्तर की सुविधाएं उपलब्ध करना एक ऐसा कारनामा है जिसे देखकर अक्ल दंग रह जाती है और जुबान बेएख्तियार एवं अनायास अल्लाह का शुक्र अदा करने लगती है।

सच कहा गया हैः

अल्लाह अगर तौफीक़ न दे तो इन्सान के बस की बात नहीं।

अल्लाह तआला सऊदी अरब को अपनी हिफाज़त व अमान में रखे, उसके शासकों, खादिमुल हरमैन शरीफैन, वली अहद युवराज, जिम्मेदारान, सुरक्षा कर्मियों, डाक्टरों, इंजीनियरों, स्वयंसेवकों और तमाम सेवकों को बेहतरीन बदला दे। अल्लाह तआला उन्हें और ज़्यादा निःस्वार्थता, क्षमता, हिकमत और दीन की सेवा के लिये शक्ति प्रदान करे। हरमैन शरीफैन की हिफाज़त व सेवा का यह मुबारक सिलसिला क्यामत तक जारी रखे। इसको हर प्रकार की बुराई, फितना, हसद, षड़यंत्र और दुश्मनी से सुरक्षित रखे और इसे इस्लाम जगत के लिये अम्न व शान्ति, भाईचारा, स्थिरता और भलाई का केन्द्र बनाये। अल्लाह तआला हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस दुआ के प्रभाव को हमेशा क़ाइम रखे कि लोगों के दिल इस धरती की तरफ खिंचे चले आयें और यह मुबारक क्षेत्र हमेशा ईमान, मुहब्बत और इस्लाम सेवा का उज्जवल दीप बना रहे। आमीन ❑❑❑

अल्लाह का अर्थ

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

अल्लाह अरबी भाषा का शब्द है। वह 'इलाह' से बना है जिसका अर्थ है 'उपास्य', 'पूज्य'। अल्लाह में विश्वास रखने का अर्थ है कि हम केवल उसी की उपासना करें, उसकी उपासना में किसी को साझी न बनाएं। क्योंकि वास्तव में इस ब्रहमांड का बनाने वाला केवल एक ही है जिसे हम अल्लाह कहते हैं। इसलिए हम किसी और की उपासना नहीं करते। इस्लाम धर्म की विशेषता यह है कि वह एक अल्लाह में आस्था रखने तथा उसी की उपासना करने का आदेश देता है।

क्या अल्लाह के साथ कोई और प्रभु-पूज्य है? उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। (कुरआन, सूरा-२७, अन-नम्ल, आयत-६३)

कुरआन चूंकि अल्लाह की अन्तिम पुस्तक है इसलिए इस पुस्तक में अल्लाह ने अपने अस्तित्व तथा अपनी विशेषताओं (सिफ़ात) को खोल-खोल कर बयान कर दिया है और शिर्क के सारे द्वार बन्द कर दिए हैं। इसलिए आप कुरआन की जिस आयत पर भी ध्यान देंगे आप को एकमात्र अल्लाह के प्रभु-पूज्य होने का प्रमाण मिलेगा। क्योंकि अब मनुष्य अपने ज्ञान के उस स्तर पर पहुंच चुका है जहां उसको यह बात सरलतापूर्वक समझ में आ सकती है कि एक अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने के योग्य नहीं है, लेकिन अगर मनुष्य फिर भी शिर्क करता है तो उसको घोर यातना का सामना करना पड़ेगा। इसलिए अगर कोई मुसलमान अब तक इस सत्य को नहीं समझ सका है तो एक प्रकार से वह अभी इस्लाम से बहुत दूर है।

असमा-ए-हुस्ना

अर्थात अल्लाह के सुन्दर और शुभ नाम। कुरआन में है-

अल्लाह के अच्छे-अच्छे नाम हैं तो तुम उसे उन्हीं नमों से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों के विषय में कुटिलता ग्रहण करते हैं। जो कुछ वे करते हैं उसका फल वे जल्द पाएंगे। (सूरा-७, अल-आराफ, आयत-१८०)

ये 'अस्मा-ए-हुस्ना' दो विषयों में प्रयुक्त होते हैं।

प्रथम यह कि इनका प्रयोग करके अल्लाह से प्रार्थना की जाए। जैसे कोई यह प्रार्थना करे, ऐ क्षमा करने वाले! मुझे क्षमा कर दे। ऐ दया करने वाले! मुझ पर दया कर दे, ऐ जीविका देने वाले! मुझे जीविका दे।'' अर्थात इन नमों का प्रयोग करके प्रार्थना केवल अल्लाह से की जाए, किसी और से न की जाए, और न किसी और को इन नामों से पुकारो, और न ही किसी को ये नाम दें।

द्वितीय यह कि इन्हीं नामों के अनुसार अल्लाह की इबादत

(उपासना) की जाए। जैसे उसी के सम्मुख हम इसलिए पश्चाताप करें क्योंकि वही बन्दों के पश्चाताप को स्वीकार कर कसकता है। उसी के सम्मुख हम इसलिए झुकें क्योंकि वही महान है, उसकी महानता में कोई साझी नहीं है। इसलिए मुसलमान पांच समय नमाज़ में उसी को सजदा करते हैं, क्योंकि उसका आदेश है-

''तुम न तो सूर्य को सजदा करो और न चंद्रमा को, बल्कि अल्लाह को सजदा करो जिसने उन्हें पैदा किया। यदि वास्तव में तुमको उसकी उपासना करनी है।'' (कुरआन, सूरा-४१, हा-मीम अस-सजदा, आयत-३७)

''और रात के कुछ हिस्से में भी उसे सजदा करो और लम्बी रात में उसकी महानता बयान करते रहो।'' (कुरआन, सूरा-७६, अद-दहर, आयत-२६)

एक सहीह हदीस में आया है कि अल्लाह के निन्यानवे नाम हैं जो उनकी तस्बीह करेगा, स्वर्ग में जाएगा। (सहीह बुखारी, ६४१० तथा सहीह मुस्लिम, २६७७)

विद्वानों का विचार है कि इसका अर्थ यह नहीं है कि अल्लाह के केवल निन्यानवे ही नाम हैं, बल्कि जो निन्यानवे की तस्बीह करेगा वह स्वर्ग में जाएगा। रहे अल्लाह के नाम तो वे इनसे कहीं अधिक हो सकते हैं। इसी लिए कुरआन में आया है-

''कह दीजिए, अल्लाह कहकर पुकारो अथवा रहमान कहकर। जिस नाम से भी पुकारो, उसके सब नाम अच्छे हैं।'' (सूरे-१७, बनी-इसराईल, आयत-११०)

अल्लाह के अच्छे-अच्छे नाम हैं, इसलिए तुम उन्हीं के द्वारा उसे पुकारो अर्थात (प्रार्थना करो) और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों के विषय में कुटिलता ग्रहण करते हैं। (सूरा,७, अल-आराफ, आयत-१८०)

अर्थात उसको ऐसे नाम लेकर न पुकारो जो उस महान सत्ता की शान के विरूद्ध हों, और न ही उसके नामों का मनमाना अर्थ निध ारित करके उसे अपमानित कर दो। न ही उसके नामों जैसे नाम उसकी सृष्टि में किसी के रखो। क्योंकि ये सब वे बातें हैं जिनसे 'शिर्क' का द्वार खुल जाता है। और शिर्क को कुरआन में सबसे बड़ा जुल्म कहा गया है। (कुरआन, सूरा-३१, लुक़मान, आयत-१३)

अगर हम पिछली क़ौमों के इतिहास का अध्ययन करें तो साफ़ पता चलता है कि उनमें शिर्क के पनपने का बड़ा कारण अल्लाह के नामों में कुटिलता और उनमें विकृति पैदा करना था। जैसे यहूदियों ने उसे 'यहोवा' का नाम दे दिया जिसका अर्थ केवल यहूदी जाति का पालनकर्ता है। इसी प्रकार ईसाइयों ने उसे 'फ़ादर' का नाम दे दिया जिसका पुत्र बनाना पड़ा। इसी प्रकार दूसरी क़ौमों ने अल्लाह के ऐसे नाम रख लिए जो उसकी सृष्टि से मिलते-जुलते थे, और फिर उस सृष्टि को ही अल्लाह बना लिया।

इसी प्रकार मक्का के विधर्मियों ने अल्लाह के नाम 'अजीज़' से 'उज़्ज़ा' नामक बुत बना लिया, इलाह से 'जात' नामक बुत बना लिया, और फिर उन्हीं की पूजा-पाठ करने

लगे। इसी की ओर कुरआन संकेत करते हुए कहता है।

उस जैसी कोई चीज़ नहीं, और वह सब कुछ सुनने और देखने वाला है। (सूरा-४२, अश-शूरा, आयत-११)

अर्थात वह निर्गुण और अचेतन नहीं है, बल्कि वह सर्वगुण सम्पन्न और चैतन्य है, परन्तु अपनी सृष्टि से भिन्न है। इसलिए उसके नामों को निर्धारित करने में हमें बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। इसका उत्तम नियम यह है कि कुरआन और सहीह हदीसों के द्वारा ही इन नामों को निर्धारित किया जाए। इस्लामी धर्मशास्त्रों में अल्लाह के जो विभिन्न नाम आए हैं, जिनका तिर्मिज़ी ३५०७ तथा इब्ने माजा ३८६१ में वर्णन किया गया है। विद्वानों का विचार है कि ये नाम नबी के बताए हुए नहीं है, बल्कि लोगों ने स्वयं अपनी ओर से एकत्र कर लिए हैं इसलिए इनकी सनद सहीह नहीं है। अर्थात नबी ने इन निन्यानवे नामों को नहीं बताया बल्कि विद्वानों पर छोड़ दिया कि वे स्वयं कुरआन तथा सहीह हदीस की रौशनी में एकत्र कर लें। यहां उन नामों की सूची दी जा रही है जिनको विद्वानों ने एकत्र किया है-

१. अल्लाह
२. अर-रहमान
३. अर-रहीम
४. अल-मलिक
५. अल-कुद्दूस
६. अस-सलाम
७. अल-मोमिन
८. अल-मुहैमिन
६. अल-अज़ीज़
१०. अल-जब्बार
११. अल-मुतकब्बिर
१२. अल-ख़ालिक
१३. अल-बारी
१४. अल-मुसव्विर
१५. अल-अव्वल
१६. अल-आख़िर
१७. अज़-ज़ाहिर
१८. अल-बातिन
१६. अस-समीअ
२०. अल-बसीर
२१. अल-मौला
२२. अल-नसीर
२३. अल-अफ़ूव
२४. अल-क़दीर
२५. अल-लतीफ़
२६. अल-ख़बीर
२७. अल-वित्र
२८. अल-जमील
२६. अल-हय्यु
३०. अल-हई
३१. अल-क़य्यूम
३२. अल-सत्तार
३३. अल-कबीर
३४. अल-मुतआल
३५. अल-वाहिद
३६. अल-क़ह्हार
३७. अल-हक़
३८. अल-मुबीन
३६. अल-क़वी
४०. अल-मतीन
४१. अल-अलिय्यु
४२. अल-अज़ीम
४३. अश-शकूर
४४. अल-हलीम
४५. अल-वासेअ
४६. अत-तव्वाब
४८. अल-हकीम
४६. अल-ग़नी

५०. अल-करीम
५१. अल-अहद
५२. अस-समद
५३. अल-क़रीब
५४. अल-मुजीब
५५. अल-ग़फ़ूर
५६. अल-वदूद
५७. अल-वली
५८. अल-हमीद
५६. अल-हफ़ीज़
६०. अल-मजीद
६१. अल-फत्ताह
६२. अश-शहीद
६३. अल-मुक़द्दम
६४. अल-मुअख़्ख़र
६५. अल-मलिक
६६. अल-मुक़्तदिर
६७. अल-मुसय्यिर
६८. अल-क़ाबिज़
६६. अल-बासित
७०. अर-राज़िक
७१. अल-क़ादिर
७२. अद्-दय्यान
७३. अश-शाकिर
७४. अल-मन्नान
७५. अल-क़ादिर
७६. अल-खल्लाक़
७७. अल-मालिक
७८. अर-रज़्ज़ाक़
७६. अल-वकील
८०. अर-रक़ीब
८१. अल-मुहसिन
८२. अल-हसीब
८३. अश-शाफ़ी
८४. अर-रफ़ीक़
८५. अल-मुअ्-ती
८६. अल-मुक़ीत
८७. अल तय्यिब
८८. अल-हकम
८६. अल-अकरम
६०. अल-बर्र
६१. अल-ग़फ़्फ़ार
६२. अर-रऊफ
६३. अल-वह्हाब
६४. अल-जव्वाद
६५. अस-सुब्बूह
६६. अल-वारिस
६७. अर-रब
६८. अल-आला
६६. अल इलाह

❑❑❑

(प्रेस रिलीज़)

मुहर्रमुल हराम १४४८ का चाँद नज़र आ गया

दिल्ली, १६ जून २०२६

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २६ ज़िलहिज्जा १४४७ हिजरी अर्थात १६ जून २०२६ को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और जुलहिज्जा के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक १७ जून २०२६ बुद्धवार के दिन मुहर्रमुल हराम की पहली तारीख होगी।

सभाओं के शिष्टाचार

सईदुर्रहमान सनाबिली

मनुष्य स्वभावतः एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेले जीवन बिताने के बजाय दूसरों के साथ रहता है, मेल-जोल रखता है, विचारों का आदान-प्रदान करता है और विभिन्न अवसरों पर सभाओं एवं महफिलों का हिस्सा बनता है। परिवार, मस्जिद, मदरसा, बाजार, दावत, समारोह, शैक्षणिक गोष्ठियाँ और मित्रों की बैठकों जैसी अनेक परिस्थितियाँ मानव जीवन का हिस्सा हैं, जहाँ लोगों के बीच संबंध स्थापित होते हैं। इन्हीं संबंधों के माध्यम से प्रेम और स्नेह विकसित होता है, ज्ञान का प्रसार होता है, अनुभवों का आदान-प्रदान होता है और समाज का निर्माण होता है। इसलिए सभा (मजलिस) मानव जीवन का एक आवश्यक और महत्वपूर्ण अंग है।

इस्लाम एक संपूर्ण जीवन-व्यवस्था है, इसलिए उसने मानव जीवन के व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों पहलुओं के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया है। जिस धर्म ने खाने-पीने,सोने-जागने, चलने-फिरने और बातचीत करने तक के शिष्टाचार सिखाए हों, वह सभाओं और महफिलों के आदाब से कैसे अनभिज्ञ हो सकता है? यही कारण है कि पवित्र कुरआन और हदीसों में सभाओं के संबंध में अत्यंत व्यापक और बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देश मिलते हैं, जो मनुष्य को केवल बाहरी सभ्यता ही नहीं बल्कि उच्च्य नैतिकता, उत्तम सामाजिक व्यवहार, मानव सम्मान और हृदय की पवित्रता की भी शिक्षा देते हैं।

इस्लाम की दृष्टि में सभा केवल कुछ लोगों के एकत्र होने का नाम नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, सुधार, सद्भावना, प्रेम, भाईचारे और अल्लाह की याद का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। एक सभा मनुष्य के दर्जे को ऊँचा उठाने का कारण भी बन सकती है और उसकी उपेक्षा एवं वंचना का साधन भी। इसी कारण शरीअत ने सभा में बैठने, बातचीत करने, दूसरों के अधिकारों का ध्यान रखने, सलाम करने, अल्लाह के जिक्र से महफिलों को आबाद रखने, लोगों को कष्ट पहुँचाने से बचने, अच्छे साथियों का चयन करने तथा अनेक अन्य शिष्टाचारों की शिक्षा दी है, ताकि मानवीय संबंध सम्मान, सद्भावना और उत्तम चरित्र की नींव पर स्थापित हों।

वास्तविकता यह है कि आज हमारी अनेक सभाएँ इन नबवी शिक्षाओं से दूर होती जा रही हैं। बातचीत में अधीरता, दूसरों की बात काट देना, चुगली (गीबत) और व्यर्थ बातें करना, रास्तों में अनावश्यक जमावड़े लगाना, दूसरों की भावनाओं की उपेक्षा करना और सभा के अधिकारों का पालन न करना जैसी बातें आम होती जा रही हैं। ऐसे वातावरण में आवश्यकता इस बात की है कि हम पुनः कुरआन और सुन्नत की उन उज्ज्वल शिक्षाओं की ओर लौटें,

जो हमारी सभाओं को भलाई, बरकत, गरिमा और पारस्परिक प्रेम का केंद्र बना सकती हैं।

प्रस्तुत लेख सभाओं के शिष्टाचार कुरआन और सुन्नत की रोशनी में उन महत्वपूर्ण आदाब और नैतिक शिक्षाओं को संकलित करने का प्रयास है, जो एक मुसलमान की व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन-व्यवस्था को सँवारने में मूलभूत भूमिका निभाती हैं। इसमें अल्लाह के जिक्र से सभाओं को जीवंत रखने, नेक संगति अपनाने, दूसरों के अधिकारों का ध्यान रखने, वार्तालाप के शिष्टाचार, बैठने-उठने के नियम, सलाम, दुआ, उत्तम सामाजिक व्यवहार तथा अन्य संबंधित विषयों को हदीसों की रोशनी में प्रस्तुत किया गया है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह इस विनम्र प्रयास को स्वीकार्यता प्रदान करे, इसे हमारे लिए और सभी पाठकों के लिए लाभदायक बनाए, और हमें इन नबवी शिष्टाचारों को अपनी व्यक्तिगत जीवनशैली तथा अपनी सभाओं में अपनाने की तौफीक प्रदान करे, ताकि हमारी महफिलें अल्लाह की याद और भलाई से आबाद हों, हमारे संबंध प्रेम और भाईचारे से मजबूत हों, और हमारा समाज इस्लामी नैतिकता का जीवंत उदाहरण बन सके।

सभाओं को अल्लाह के जिक्र से आबाद रखना चाहिए

इस्लाम में हर बैठक और सभा को अल्लाह के जिक्र से जीवंत रखने की शिक्षा दी गई है, क्योंकि अल्लाह का जिक्र एक मुसलमान के लिए आध्यात्मिक आहार का स्थान रखता है। जब मनुष्य की आत्मा को यह आहार निरंतर प्राप्त होता रहता है, तो यह उसके लिए भलाई, बरकत और लाभ का कारण बनता है। इसके विपरीत, ऐसी सभा जिसमें अल्लाह का जिक्र न हो, क्यामत के दिन पछतावे और अफसोस का कारण बन सकती है।

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फरमायाः

''जो लोग किसी सभा में बैठें और उसमें अल्लाह का जिक्र न करें, तो वे क्यामत के दिन उस सभा को अपने लिए पछतावे का कारण पाएँगे।''(मुस्नद अहमदः ७०६३, शैख शुऐब अरनाऊत ने इसे सहीह करार दिया है।)

इस हदीस से स्पष्ट होता है कि सभाओं को अल्लाह के जिक्र से आबाद रखने की शिक्षा दी गई है। साथ ही यह चेतावनी भी दी गई है कि यदि सभाएँ अल्लाह की याद से खाली रहेंगी, तो वही सभाएँ क्यामत के दिन अफसोस और पछतावे का कारण बन जाएँगी।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या सभाओं के संबंध में हदीसों में कुछ विशेष अजकार (जिक्र) भी बताए गए हैं, या केवल सामान्य रूप से तौबा, इस्तिगफार और अल्लाह का जिक्र ही अपनी महफिलों को आबाद रखने के लिए पर्याप्त है?

विशेष जिक्र (अल्लाह की याद) और उनके फजाइल

शरीअत ने न केवल सामान्य रूप से अल्लाह के जिक्र की प्रेरणा दी है, बल्कि कुछ विशेष अजकार (जिक्र) भी बताए हैं, जिनके फजाइल और बरकतों की खुशखबरी दी गई है। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण अजकार निम्नलिखित हैं:

१. कुरआन करीम की तिलावत

कुरआन करीम की तिलावत सबसे श्रेष्ठ जिक्र है। यह दिलों को सुकून देती है, रूहों को ताजगी प्रदान करती है और इंसान के भीतर निरंतर संघर्ष तथा अच्छे कर्मों की चाह पैदा करती है। इसकी बरकत से मुरझाई हुई रूहें भी नई जिंदगी और ऊर्जा प्राप्त करती हैं।

कुरआन करीम वह महान जिक्र है जो न केवल हिदायत देता है बल्कि दिल में अल्लाह की मोहब्बत और उसके प्रति रुचि भी पैदा करता है। जब इंसान इससे अपना संबंध मजबूत कर लेता है तो उसकी रूहानियत विकसित होती है और उसकी जिंदगी हिदायत के नूर से जगमगा उठती है।

हजरत अबू हुरैरा (रजियल्लाहो अन्हो) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

जो व्यक्ति इल्म हासिल करने के लिए किसी रास्ते पर चलता है, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देता है। और जो लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर (मस्जिद) में इकट्ठा होकर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और उसे आपस में पढ़ते-पढ़ाते हैं, उन पर सुकून नाजिल होता है, रहमत उन्हें ढाँप लेती है, फरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और अल्लाह तआला अपने पास मौजूद फरिश्तों में उनका जिक्र करता है। और जिसे उसके कर्म पीछे रख दें, उसका वंश उसे आगे नहीं बढ़ा सकता। (सहीह मुस्लिमः २६९९)

२. इस्तिग़फार (अल्लाह से माफी माँगना)

तौबा, इस्तिगफार और अल्लाह की ओर रुजू करना ऐसे सुंदर और अर्थपूर्ण अमल हैं जिनमें बंदा अपने रब के सामने अपनी कमजोरी का इकरार करता है, अपनी गलतियों पर पछतावा करता है और विनम्रता के साथ माफी की दुआ करता है।

जो व्यक्ति इस भावना को अपनी जिंदगी का हिस्सा बना लेता है, वह अल्लाह तआला के निकट ऊँचा दर्जा और महान स्थान प्राप्त करता है। रसूलुल्लाह की मुबारक जिंदगी भी इसी भावना से भरपूर थी। आपकी जबान पर अक्सर इस्तिगफार रहता था, यहाँ तक कि आप एक ही मजलिस में बार-बार दुआ पढ़ते थे।

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजियल्लाहु अन्हुमा) फरमाते हैंः

हम रसूलुल्लाह को एक ही मजलिस में उठने से पहले सौ बार यह दुआ पढ़ते हुए गिनते थेरू

अर्थ ऐ मेरे पालनहार! मुझे माफ कर दे और मेरी तौबा कबूल फरमा। निःसंदेह तू ही बहुत तौबा कबूल करने वाला और अत्यंत दयालु है। (सुनन अबू दाऊदः १५१६, सुनन तिर्मिजीः ३४३४, सुनन इब्ने माजाः ३८१४)

३. मजलिसों को तस्बीह, तहमीद, तमजीद और दुआ से आबाद रखना

ईमान वालों की सभाओं की एक विशेष पहचान यह है कि वे अल्लाह के जिक्र से खाली नहीं होतीं। ऐसी महफिलों से अल्लाह के जिक्र की पाकीजा खुशबू और रूहानी प्रभाव फैलते हैं, जो वातावरण को सुगंधित कर देते हैं और हर सहभागी के दिल और दिमाग को रोशन तथा ताजा कर देते हैं।

रसूलुल्लाह का तरीका यह था कि ऐसी मुबारक महफिलों में आप लगातार अल्लाह की तस्बीह, तहमीद और तमजीद करते रहते, साथ ही जन्नत की दुआ करते और जहन्नम से पनाह माँगते रहते।

हजरत अबू हुरैरा (रजियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

अल्लाह के कुछ फरिश्ते ऐसे हैं जो रास्तों में घूमते रहते हैं और अल्लाह का जिक्र करने वालों को तलाश करते हैं। जब वे किसी ऐसी जमाअत को पाते हैं जो अल्लाह का जिक्र कर रही हो, तो एक-दूसरे को पुकारते हैं आओ, तुम्हारी जरूरत यहाँ है। फिर वे अपने पंखों से उन्हें आसमान-ए-दुनिया तक ढाँप लेते हैं।

फिर अल्लाह तआला उनसे पूछता है, जबकि वह सबसे अधिक जानने वाला हैः मेरे बंदे क्या कह रहे हैं? वे जवाब देते हैंः वे तेरी तस्बीह, तकबीर, तहमीद और तमजीद कर रहे हैं।

अल्लाह पूछता हैः क्या उन्होंने मुझे देखा है?

फरिश्ते कहते हैं नहीं, ऐ हमारे रब!

अल्लाह फरमाता हैः अगर वे मुझे देख लेते तो मेरी इबादत और भी अधिक करते, मेरी और अधिक प्रशंसा करते और मेरी अधिक तस्बीह करते।

फिर अल्लाह पूछता हैः वे मुझसे क्या माँग रहे हैं?

फरिश्ते कहते हैंः वे जन्नत माँग रहे हैं।

अल्लाह पूछता है क्या उन्होंने जन्नत को देखा है?

वे कहते हैंः नहीं।

अल्लाह फरमाता हैः अगर वे उसे देख लेते तो उसकी चाहत और भी बढ़ जाती।

फिर अल्लाह पूछता हैः वे किस चीज से पनाह माँग रहे हैं?

फरिश्ते कहते हैंः जहन्नम से।

अल्लाह पूछता हैः क्या उन्होंने उसे देखा है?

वे कहते हैंः नहीं।

अल्लाह फरमाता हैः अगर वे उसे देख लेते तो उससे और अधिक डरते और उससे और अधिक भागते।

फिर अल्लाह फरमाता हैः मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उन्हें माफ कर दिया।

एक फरिश्ता अर्ज करता हैः उनमें एक ऐसा व्यक्ति भी है जो उनका सदस्य नहीं था, बल्कि किसी काम से वहाँ आया था।

अल्लाह फरमाता हैः ये ऐसे लोग हैं कि उनका हमनशीन (साथ बैठने वाला) भी महरूम नहीं रहता। (सहीह बुखारीः ६४०८)

फिर अल्लाह पूछता हैः वे मुझसे क्या माँग रहे हैं?

फरिश्ते कहते हैंः वे जन्नत माँग रहे हैं।

अल्लाह पूछता है क्या उन्होंने जन्नत को देखा है?

वे कहते हैंः नहीं।

अल्लाह फरमाता हैः अगर वे उसे देख लेते तो उसकी चाहत और भी बढ़ जाती।

फिर अल्लाह पूछता हैः वे किस चीज से पनाह माँग रहे हैं?

फरिश्ते कहते हैंः जहन्नम से।

हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचार-विचार और आदतें

मौलाना अबुल कलाम आजाद

इमाम हुसैन ने हजरत अली से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नैतिक गुणों और आदतों के बारे में पूछा। हजरत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमायाः आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमेशा प्रसन्न मुख, कोमल स्वभाव और दयालु प्रकृति के थे। आप कठोर मिजाज या संकीर्ण हृदय वाले नहीं थे। आपने कभी किसी के लिए बुरा शब्द नहीं कहा। न आप किसी के दोष खोजते थे और न ही अनावश्यक कठोरता बरतते थे। यदि कोई बात आपको पसंद नहीं आती, तो आप उससे किनारा कर लेते थे।

आपने अपने जीवन से तीन बातों को पूरी तरह दूर कर रखा थाः

बहस और विवाद करना, आवश्यकता से अधिक बोलना और ऐसी बातों में पड़ना जिनका कोई उद्देश्य न हो। दूसरों के संबंध में भी आप तीन बातों से बचते थेः

किसी को बुरा नहीं कहते थे।

किसी की बुराई या दोष नहीं निकालते थे।

किसी के निजी और आंतरिक मामलों की टोह में नहीं रहते थे।

आप केवल वही बातें करते थे जिनसे कोई लाभदायक परिणाम निकल सकता हो। जब आप बोलते, तो सहाबा (रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम) सिर झुकाकर और पूर्ण शांति से आपकी बातें सुनते, मानो उनके सिरों पर पक्षी बैठे हों। जब आप मौन हो जाते, तब वे आपस में बातचीत करते।

यदि कोई दूसरा व्यक्ति बोल रहा होता, तो आप उसके पूरा होने तक ध्यानपूर्वक सुनते और बीच में उसकी बात नहीं काटते थे। लोग जिन बातों पर हँसते, आप भी केवल मुस्कुरा देते। कोई अनजान व्यक्ति यदि बेबाकी से बात करता, तो आप धैर्य और सहनशीलता से उसका व्यवहार सह लेते।

आप अपने सामने अपनी प्रशंसा सुनना पसंद नहीं करते थे, लेकिन यदि कोई आपके उपकारों के लिए धन्यवाद देता, तो उसे स्वीकार कर लेते थे। जब तक बोलने वाला स्वयं चुप न हो जाए, आप उसकी बात नहीं काटते थे।

आप अत्यंत उदार, अत्यंत सत्यवादी, अत्यंत कोमल स्वभाव और अत्यंत सुखद संगति वाले थे। जो व्यक्ति आपको पहली बार देखता, वह आपके व्यक्तित्व से प्रभावित और सम्मान से भर जाता। लेकिन जैसे-जैसे वह आपको निकट से जानता, आपके प्रति उसका प्रेम बढ़ता जाता। वह कहा करता थाः

मैंने आप जैसा व्यक्ति न पहले कभी देखा और न बाद में देखा।

यह वर्णन केवल नुबुव्वत (पैगम्बरी) के तेईस वर्षों का ही नहीं, बल्कि अनेक वर्षों के प्रत्यक्ष अवलोकन और अनुभव का भी संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। (रसूले रहमत)

सफर में जाने से पहले और सफर के बाद के अहकाम

इस्लाम एक मुकम्मल जिंदगी का निजाम है, जो इंसान को हर मामले में मार्गदर्शन देता है। सफर भी इंसानी जिंदगी का अहम हिस्सा है। इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफर पर जाने से पहले और सफर से वापस आने के बाद कुछ विशेष दुआएँ, आदाब और हिदायतें बताई हैं, जिनका पालन करना हर मुसलमान के लिए लाभदायक और सवाब है।

सफर पर जाने से पहले के अहकाम १. अल्लाह पर भरोसा (तवक्कुल) करना

सफर पर निकलते समय अल्लाह तआला पर पूरा भरोसा रखना चाहिए और उसी से मदद माँगनी चाहिए।

२. दो रकअत नफ्ल नमाज पढ़नाः कई उलमा ने हदीसों के आधार पर सफर से पहले दो रकअत नफ्ल नमाज पढ़ने को मुस्तहब बताया है, ताकि अल्लाह तआला सफर को आसान और बरकत वाला बनाए।

३. सफर की दुआ पढ़ना

जब सवारी पर बैठें तो यह दुआ पढ़ेंः

सुब्हानल्लजी सख्खरा लना हाजा व मा कुन्ना लहू मुकरिनीन, व इन्ना इला रब्बिना लामुनकलिबून। (सूरह जुखरुफः १३-१४)

फिर नबी द्वारा सिखाई गई सफर की दुआ पढ़नी चाहिए।

४. घर वालों को सलाम और दुआ देना

घर से निकलते समय परिवार वालों से अच्छे तरीके से विदा लेना और उनके लिए दुआ करना सुन्नत है।

५. यह दुआ पढ़नाः नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर से निकलते समय यह दुआ पढ़ते थेः

बिस्मिल्लाहि, तवक्कल्तु अलल्लाही ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाही। (अबू दाऊद)

अर्थात अल्लाह के नाम से, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, और गुनाहों से बचने तथा नेक काम करने की ताकत केवल अल्लाह ही की तरफ से है।

सफर के दौरान के आदाब

नमाजों की पाबंदी करना।

जिक्र और दुआ का एहतिमाम करना। साथी मुसाफिरों के साथ अच्छा व्यवहार करना।

गुनाहों और फुजूल बातों से बचना। सफर से लौटने के बाद के अहकाम १. वापसी की दुआ पढ़ना

जब सफर से वापस आएँ तो यह दुआ पढ़ेंः आयिबूना ताइबूना आबिदूना लि-रब्बिना हामिदून।(सहीह बुख़ारी)

अर्थात हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, अपने रब की इबादत करने वाले हैं और उसी की प्रशंसा करने वाले हैं।

२. मस्जिद में दो रकअत नमाज पढ़ना : हजरत कअ्ब बिन मालिक से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब सफर से लौटते तो सबसे पहले मस्जिद में जाकर दो रकअत नमाज अदा करते थे। (सहीह बुखारी)

(शेष पृष्ठ २३ पर)

पवित्र कुरआन की तिलावत की फजीलत

कुरआन मजीद अल्लाह तआला की अंतिम और मुकम्मल किताब है, जो पूरी इंसानियत की हिदायत के लिए नाजिल की गई। इसकी तिलावत (पाठ) करना बहुत बड़ा इबादत का काम है। कुरआन की तिलावत से न केवल इंसान को सवाब मिलता है, बल्कि उसके दिल को सुकून, रूह को ताकत और जीवन को सही दिशा भी मिलती है। सही हदीसों में कुरआन की तिलावत की अनेक फजीलतें बयान की गई हैं।

सबसे पहले, कुरआन की तिलावत पर मिलने वाले सवाब का जिक्र आता है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

जो व्यक्ति कुरआन का एक हरफ पढ़ता है, उसे एक नेकी मिलती है, और एक नेकी का सवाब दस गुना कर दिया जाता है। (तिर्मिजी)

इस हदीस से पता चलता है कि कुरआन की तिलावत करने वाले को हर अक्षर पर दस अज्र मिलता है।

दूसरी फजीलत यह है कि कुरआन क़्यामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिए सिफारिश करेगा। सही हदीस में आता है कि नबी करीम ने फरमायाः

कुरआन पढ़ो, क्योंकि यह क़्यामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिए सिफारिशी बनकर आएगा। (सहीह मुस्लिम)

इसलिए हर मुसलमान को चाहिए कि वह रोजाना कुरआन की तिलावत का मामूल बनाए।

कुरआन पढ़ने और सिखाने वालों की विशेष महत्ता भी हदीसों में बयान हुई है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

तुम में सबसे बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और उसे दूसरों को सिखाए। (सहीह बुखारी)

इस हदीस से मालूम हुआ कि कुरआन की शिक्षा प्राप्त करना और उसे फैलाना सबसे श्रेष्ठ कार्यों में से है।

इसके अलावा, जो व्यक्ति कठिनाई के साथ कुरआन पढ़ता है, उसे भी बड़ा सवाब मिलता है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

जो व्यक्ति कुरआन को अच्छी तरह पढ़ता है, वह सम्मानित फरिश्तों के साथ होगा, और जो कठिनाई के साथ पढ़ता है, उसे दोहरा सवाब मिलेगा। (सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम)

इसलिए यदि किसी को पढ़ने में कठिनाई हो तो उसे निराश नहीं होना चाहिए, बल्कि अभ्यास जारी रखना चाहिए। सारांश यह है कि कुरआन की तिलावत एक महान इबादत है, जो दुनिया और आख़िरत दोनों में सफलता का माध्यम है। हर मुसलमान को चाहिए कि वह नियमित रूप से कुरआन पढ़े, उसके अर्थ को समझे और उसकी शिक्षाओं पर अमल करे। अल्लाह तआला हमें कुरआन पढ़ने, समझने और उस पर अमल करने की तौफीक अता फरमाए। आमीन

इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह की दियानतदारी

मौलाना मुहम्मद खुर्शीद आलम मदनी

इमाम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि के बारे में सहीह मुस्लिम की यह हदीस हैः

''अगर दीन सुरैया (तारों के समूह) पर भी पहुंच जाए, तो फारस का एक व्यक्ति उसे प्राप्त कर लेगा।'' (सहीह मुस्लिमः २५४६)

मुहद्दिसीन (हदीस के विद्वान) इस हदीस का एक मिसदाक (उदाहरण) इमाम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि को मानते हैं।

उनका चरित्र ऐसा था कि वे फरमाते थेः

''जब से मुझे यह मालूम हुआ कि गीबत (पीठ पीछे बुराई करना) हराम है, मैंने कभी किसी की गीबत नहीं की।'' (अल-मदखल इला सहीहिल-बुखारी)

उनके पिता इस्माईल, इमाम मालिक के शागिर्द थे। वे बड़े मुहद्दिस और व्यापारी थे। मृत्यु के समय उन्होंने कहाः

''मेरे माल में न कोई हराम कमाई है और न ही हराम होने का कोई शक।''

उनकी माता अत्यंत इबादतगुजार और दुआओं की कबूलियत वाली महिला थीं। कहा जाता है कि बचपन में इमाम बुखारी की आंखों की रोशनी चली गई थी। उनकी माता ने बहुत दुआ की। एक रात उन्होंने खुवाब में देखा। उन्होंने कहाः

''अल्लाह ने तुम्हारी दुआओं की बरकत से तुम्हारे बेटे की आंखों की रोशनी लौटा दी है।''

उस समय इमाम बुखारी विद्यार्थी थे। एक बार वे समुद्री यात्रा कर रहे थे। उनके पास यात्रा खर्च के लिए एक हजार दीनार थे। जहाज में एक व्यक्ति उनसे मिला और बहुत प्रेम तथा श्रद्धा का दिखावा करने लगा। इमाम बुखारी ने भी उसके साथ अच्छा व्यवहार किया।

एक दिन बातचीत के दौरान उन्होंने उसे बता दिया कि उनके पास एक हजार दीनार हैं। वह धूर्त व्यक्ति उन पैसों को हथियाने की योजना बनाने लगा। यात्रा के दौरान इंसान को बहुत सावधान रहना चाहिए।

हर आदमी में होते हैं दो-चार आदमी, जिसे भी देखना, कई बार देखना।

एक दिन उसने नाटक रचा। सुबह होते ही वह जोर-जोर से रोने और चिल्लाने लगा, कपड़े फाड़ने लगा और सिर पीटने लगा। जहाज में हंगामा मच गया। लोगों ने पूछाः

''क्या हुआ?'' उसने कहाः

''मेरी थैली खो गई है, जिसमें एक हजार दीनार थे।''

अब यात्रियों का सामान जांचा जाने लगा। इमाम बुखारी रहमातुल्लाहि अलैहि ने सोचा कि यदि मेरी थैली से पैसे निकल आए, तो लोग क्या समझेंगे? इसलिए उन्होंने चुपके से अपनी थैली समुद्र में फेंक दी।

जब पैसे नहीं मिले तो लोग उस व्यक्ति को डांटने लगे कि उसने सब यात्रियों को बेवजह परेशान किया।

जब जहाज किनारे पहुंचा और लोग उतर गए, तब वह व्यक्ति इमाम बुखारी रहमातुल्लाह अलैहि के पास आया और पूछाः ''आपने उन पैसों का क्या किया?''

उन्होंने उत्तर दियाः ''मैंने उन्हें समुद्र में फेंक दिया।''

वह आश्चर्यचकित होकर बोलाः

''आपने इतनी बड़ी रकम को कैसे बर्बाद कर दिया?''

इमाम बुखारी ने कहाः

''तुम जानते हो कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें एकत्र कर रहा हूं। लोग मुझे अमानतदार और ईमानदार समझते हैं। मैं यह गवारा नहीं कर सकता था कि एक हजार दीनार की खातिर मुझ पर चोरी या बेईमानी का आरोप लगे।

मैंने अपनी पूरी जिंदगी में जो अमानतदारी और सच्चरित्रता के मोती कमाए हैं, उन्हें कुछ सिक्कों के बदले खोना मंजूर नहीं था।''

आज हममें से बहुत से लोग चाहते हैं कि झूठ भी बोलें, धोखा भी दें, अपना चरित्र भी दागदार करें, लेकिन फिर भी दुनिया हमारी प्रशंसा करे, समाज में हमारी इज़्ज़त बनी रहे और लोग हमारा सम्मान करते रहें।

जबकि वास्तविक सम्मान और प्रतिष्ठा सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और अच्छे चरित्र से प्राप्त होती है।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल टुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं

नवास बिन समआन रज़ियल्लल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरे बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

मअ्क़िल बिन यसार रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है। (मुस्लिम २६४८)

अबू अय्यूब अनसारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी शख्स के लिये यह जाइज नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज्यादा के लिये मुलाकात छोड़े इस तरह कि जब दोनों का सामना हो जाये तो यह भी मुंह फेर ले और वह भी मुंह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहल करे। (बुखारी ६०७७ मुस्लिम २५६०)

उमर बिन अबू सलमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से कहा ऐ लड़के खाना खाने से पहले बिसिमिल्लाह कहो और अपने दायें हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (बुखारी ५३७६ मुस्लिम २०२२)

अबू बकरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुकाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी ७०८३ मुस्लिम २८८८)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः उमरा और हज्जे मबरूर का बदला जन्नत है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जमाही शैतान की तरफ से आती है, इसलिये जब तुम में से किसी को जमाही आये तो अपनी ताकत भर उसे शैतान की तरफ लौटा दे। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान को जो भी, थकान, बीमारी रंज व गम, तकलीफ पहुचती है यहां तक कि कांटा चुभता है तो अल्लाह इसकी वजह से उसके गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

ने फरमायाः अल्लाह तुम में से किसी के तौबा कर लेने पर बहुत खुश होता है जैसे तुम में से कोई अपनी गुमशुदा ऊंटनी के पा जाने पर खुश होता है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम उस वक्त तक जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि ईमान न ले आओ, और उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिसके करने से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करने लगो गे? अपने बीच में सलाम को फैलाओ। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पांचों नमाज़ें और एक जुमा से दूसरे जुमा तक और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक इनके दर्मियान में होने वाले गुनाहों के लिये कफ्फारा हैं शर्त यह है कि कबीरा गुनाहों से बचा जाये। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सबसे अफज़ल रोज़ा अल्लाह का महीना मुहर्रम का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारे खिलाफ हथियार उठाया तो वह हम में से नहीं है और जिसने हम को धोखा दिया तो वह हम में से नहीं है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला टूट जाता है मगर तीन चीज़ों की वजह से नहीं टूटता हैः सद-क-ए जारिया, वह ज्ञान जिस से फाइदा उठाया जाये और नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने मुर्दों को लाइलाहा इल्लल्लाह की तलकीन करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ गढ़ा तो उसका ठिकाना जहन्नम है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने नेकी की तरफ बुलाया उसके लिये उसी तरह का बदला है जिसने इस नेकी को अपनाया उनके सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। और जिसने बुराई की तरफ बुलाया तो उसको उसी जैसा गुनाह मिलेगा जिसने इस बुराई पर अमल किया उनके गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अललाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने घरों को कब्रस्तान न बनाओ, बेशक शैतान उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरे बक़रा पढ़ी जाती है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसकी बुराइयों से उसका पड़ोसी सुरिक्षत न हो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सजदे में बन्दा अपने रब से करीब होता है इस लिये ज्यादा से ज्यादा दुआ करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह क्यामत के दिन कहे गा मेरे जलाल से मुहब्बत करने वाले कहां हैं, उस दिन मैं उनको अपनी छाया में कर लूंगा, उस दिन मेरी छाया के सिवा कोई छाया नहीं होगी। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आप ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में नई बात ईजाद की जो उस से न हो तो वह मरदूद है। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आप ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा महबूब आमाल वह हैं जिनको बराबर किया जाये अगर्चे कम हों। (बुखारी-मुस्लिम) आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः जिस शख्स ने अल्लाह की फरमाबरदारी के लिये नज़र मानी तो चाहिये कि वह उस की फरमाबरदारी करे और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की नज़र मानी तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (बुखारी)

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.......................

पिता का नाम..............

स्थान.......................

पोस्ट आफिस..............

वाया.......................

तहसील.....................

जिला.......................

पिन कोड..................

राज्य का नाम.............

मोबाइन नम्बर.............

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताः**अहले हदीस मंज़िल 4116,** उर्दू बाज़ार, **जामा मस्जिद दिल्ली-6**

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

जमाअती खबरें

दारुल उलूम अहमदिया सलफिया, दरभंगा (बिहार) की नई शैक्षणिक इमारतों के शिलान्यास समारोह में मर्कज़ी जमीयत अहल-ए-हदीस हिन्द के अमीर की सहभागिता एवं अध्यक्षीय संबोधन

मर्कजी अहले हदीस हिन्द के अमीर, आदरणीय फजीलतुश-शैख असगर अली इमाम महदी सलफी साहब (हफिजहुल्लाह) ने दिनांक ०७ जून २०२६ को भारत की प्राचीनतम इस्लामी शिक्षण संस्थाओं में से एक दारुल उलूम अहमदिया सलफिया, दरभंगा की नई शैक्षणिक इमारतों आदि के शिलान्यास समारोह में भाग लिया।

इस अवसर पर दारुल उलूम की जामा मस्जिद में आयोजित एक परामर्शात्मक बैठक में उन्होंने अध्यक्ष के रूप में संस्थान के पदाधिकारियों, शिक्षकों, सलफिया के फारिग़ीन तथा क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों एवं उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने ज्ञान के महत्व और उपयोगिता, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उलामा और मदरसों की भूमिका तथा दारुल उलूम अहमदिया सलफिया के गौरवशाली इतिहास पर प्रकाश डाला। विशेष रूप से उन्होंने मौलाना अब्दुल अजीज रहीमाबादी, डा. सैयद फरीद एवं उनके परिवार तथा उन सम्मानित व्यक्तियों और पूर्वजों की सेवाओं और त्याग का उल्लेख किया, जिन्होंने संस्थान की स्थापना के समय संस्थापक, शिक्षक, सहयोगी और संरक्षक के रूप में हर प्रकार से योगदान दिया था।

अमीरे मोहतरम ने अपने संबोधान में मर्कज़ी जमीयत अहले हदीस हिन्द की स्थापना और विस्तार में दारुल उलूम के वरिष्ठ विद्वानों की महत्वपूर्ण भूमिका का भी विशेष उल्लेख किया।

यह उल्लेखनीय है कि इस ऐतिहासिक अवसर पर सलफिया के फारिग़ीन, विभिन्न दानदाताओं और उपस्थित लोगों ने निर्माण कार्य हेतु भरपूर सहयोग का आश्वासन दिया। उनके पूर्वजों ने भी दारुल उलूम की प्रारंभिक स्थापना के समय संस्थान के जिम्मेदारों का हर संभव साथ दिया था। इनमें दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, चम्पारण, शिवहर और वैशाली आदि जिलों का विशेष योगदान रहा है।

दारुल उलूम के स्नातकों (फारिगीन) तथा सभी उपस्थित लोगों में अत्यधिक उत्साह, त्याग और सहयोग की भावना देखने को मिली। विशेष रूप से फरीद हाउस, डा. सैयद अब्दुल हफीज के पौत्रों, डा. सैयद अब्दुल अजीज के पुत्रों तथा डा. सैयद अब्दुल हकीम और डा. सैयद अब्दुल हलीम (रहिमहुमुल्लाह) के पूरे परिवार की उदारता और सहयोग की भावना सभी के लिए प्रेरणास्रोत बनी रही। अल्लाह तआला सभी के सहयोग को स्वीकार फरमाए।

अमीरे मोहतरम के संबोधन और जुहर की नमाज के बाद उनके नेतृत्व में शिलान्यास सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात उन्होंने निर्माण परियोजना की सफल, सुंदर एवं शीघ्र पूर्णता, उसकी स्वीकार्यता तथा जनकल्याणकारी लाभों के लिए भावपूर्ण दुआ की।

इस अवसर पर बिहार प्रांतीय जमीयत अहल-ए-हदीस के उपाध यक्ष शैख मुहम्मद खुर्शीद आलम मदनी साहब ने मुख्य भाषण दिया। कार्यक्रम का संचालन मौलाना शकील अहमद सलफी साहब ने किया, जबकि मौलाना बदर आलम सलफी साहब (शिक्षक, दारुल उलूम) ने संचालन में सहयोग किया।

स्वागत भाषण तथा निर्माण परियोजना का परिचय इंजीनियर सैयद इस्माईल खुर्रम साहब, नाजिमे आला, दारुल उलूम अहमदिया सलफिया ने प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध चिकित्सक डा. यूसुफ फैसल साहब भी सभी व्यवस्थाओं में सक्रिय रूप से अग्रणी रहे। इस अवसर पर मौलाना मंजर अहसन सलफी साहब (सचिव, अब्नाए सलफिया), मौलाना कमर सुब्हानी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस ऐतिहासिक अवसर पर सलफिया के फारिगीन, दारुल उलूम के शुभचिंतकों एवं गणमान्य व्यक्तियों की बड़ी संख्या उपस्थित रही। इनमें प्रमुख रूप से मौलाना मुहम्मद अशरफ सलफी साहब (प्रधानाचार्य), मौलाना वकील अहमद सलफी, मौलाना अमानतुल्लाह सलफी, मौलाना अमरुल्लाह सलफी, मौलाना मुहम्मद इरफान सलफी, मौलाना अब्दुल कदीर नदवी, मौलाना तौसीफ मदनी सहित दारुल उलूम के अनेक शिक्षक तथा क्षेत्र के सम्मानित व्यक्तियों में मौलाना मुश्ताक अहमद सलफी, मुहम्मद फारूक (पुत्र मौलाना अबूबक्र सलफी), मौलाना अनवर कमाल सलफी, ओवैस रहीमाबादी, सईदुज़्जफर नजर, डा. फिरोज एवं उनके बंधु, इम्तियाज अख़्तर (ढाका), मौलाना मुहम्मद इस्लाम सलफी, अरशद फरीद, शाहिद हसनैन, मौलाना अबू हुरैरा सलफी, मौलाना जकी अहमद मदनी, मौलाना डा. जुबैर सलफी, मौलाना शकील उमरी, मौलाना खालिद मदनी, मौलाना कलीमुल्लाह सलफी, आसिम साहब, मौलाना नूरुल इस्लाम सलफी, डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, डा० मुहम्मद हंजला तैमी, हाफिज ख़ालिद सैफी, डा० मुहम्मद आदम, डा० जिलुर्रहमान तैमी, मौलाना अशफाक अहमद रियाजी, मौलाना मुहम्मद साबिर रियाजी, मौलाना अंजारुल इस्लाम आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

❑❑❑

(शेष पृष्ठ १७ का)

३. परिवार से मुलाकात और शुक्र अदा करना

सफर से सकुशल लौटने पर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और अपने घर वालों से प्रेम और खुशी के साथ मिलना चाहिए।

४. रात में अचानक घर न पहुँचना

बिना सूचना के रात में घर पहुँचने से बचना चाहिए। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसकी हिदायत दी है ताकि परिवार तैयारी कर सके। (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम)

सफर इंसान के लिए अनेक कठिनाइयों और परीक्षाओं का कारण बन सकता है। इसलिए इस्लाम ने सफर से पहले, दौरान और बाद में विशेष दुआएँ और आदाब सिखाए हैं। यदि मुसलमान इन सुन्नतों पर अमल करे तो उसका सफर सुरक्षित, बरकत वाला और अल्लाह की रहमत का कारण बन जाता है। हमें चाहिए कि हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बताई हुई इन सुन्नतों को अपनाएँ और अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाएँ।

मानवता का सम्मान और विश्व-धर्म(११ वीं क़िस्त)

अब इसे और ज़्यादा धोका नहीं दिया जा सकताः

आह तुम्हें क्या हो गया? यह औरत भी अजीब ज़ात बनीं हुई है मर्द इसे हर एतबार से क़ैद का पाबन्द बना रहा है, अपने फरेब के जाल में फंसा कर उसके गले में फंदा डाल कर और पाँव में बेशुमार बेड़ियों को पहनाकर इसे आज़ादी के नाम पर धोका दे रहा है। पुराने ज़माने में लौंडियाँ, बाँदियाँ और गुलामी की जंजीर में जकड़ी हुई औरतें भी इतनी कैद व बंदिश का शिकार नहीं थीं। राजशाही में भी गुलामी करते हुए इतना मर्दों के हवस का शिकार न थीं, पहले वह घर में वक़्ती गुलामी करती थीं, इन्सानी पीढ़ी को बढ़ाती और हिफ़ाज़त करती थीं, उनका पालन पोषण करती और घरों में रहती थीं और अपनी ममता निछावर करती थीं। सीने को बच्चों और पति की वफा और मुहब्बत से आबाद रखती थीं और अपनी इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करती थीं।

अब वह धूप, गर्मी, सर्द गरम और मशीनी दौर में भाग दौड़ और अत्यंत व्यस्त जीवन गुज़ारने पर मजबूर हैं। मर्दों का दिल बहलाने के लिये अब हर जगह एक खिलौना चाहिये खादिम चाहिए, कार्यकर्ता स्वंयसेवक, खिदमतगार कलर्क व पेशकार चाहिये। उसकी बनावट और स्थिति बदल तो नहीं सकते। उसकी प्राकृतिक जरूरतें और आदतें तो बदल नहीं सकते और न इसमें उनकी हिस्सेदारी निभा सकते हैं मगर अपने हिस्से के जितने काम और बोझ हैं उन्हीं के सर डाल कर मर्दों को आज़ाद और मर्दों को बर्बाद करने का कर्तव्य निभा रहे हैं। आप अपनी महान माओं और बहनों को हर्गिज़ न भूलें। आसिया, मरयम अलैहुमुस्सलाम आइशा फातिमा, जैनब व रूकैया रज़ियल्लाहो अन्हुन्ना को आदर्श बनायें और पवित्र बीवियों सुन्नत और कुरआन की आयत की रोशनी में आइडियल क़रार दें।

औरत का हक़ मिल चुका हैः

क्या औरत के लिये यह काफी नहीं कि वह हौवा अलैहस्सलाम की लड़की है उसे मर्दों के अधिकार के एतबार से बराबर अधिकार दिया गया है ''और औरतों के भी वैसे ही हक़ हैं जैसे इन पर मर्दों के हैं अच्छाई के साथ'' (सूरे निसाः २२८) और वह मां है जिसका दर्जा पूरी मानवता में अल्लाह तआला और उसके रसूलों के बाद सबसे ऊंचा है। औरतों के अधिकार रहन सहन और अर्थ एवं व्यवपार में मर्दों से किसी तरह कम नहीं हैं। सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ अल्लाह के आख़िरी नबी को औरत के माल से तिजारत की तौफीक दी गई वह उनके लिये सुकून का कारण थीं दीन की शैदाई

थीं और आप की सहायक व हमदर्द रहीं। हिरा के ग़ार से घबराये हुए शिक्षा का पाठ लेकर आये तो आप को सॉंत्वना देने वाली एक औरत ही थीं जिन्होंने अपने अनुभव की बुनियाद पर आप को संतुष्ट कर दिया था और मानव कल्याण के लिये जो बुनियादी और महत्वपूर्ण काम कर रहे थे इसमें वह साझीदार थीं और उन्होंने आप को दिलासा (सॉंत्वना) दिया और इस विश्वास को पैदा करने का प्रयास किया कि आप मानवता के दबे कुचले और कमज़ोर व पीड़ित वर्गों और व्यक्तियों के लिये जो बलिदान पेश करते हैं वह आप के सच्चे पैग़म्बर होने और इस्लाम के सच्चे और मानवतावादी होने का स्पष्ट सुबूत हैं। यह आप की पहली पवित्र बीवी हज़रत ख़दीजा हैं जिन की सज्जनता और सम्मान की यह स्थिति है कि सबसे आख़िरी नबी और सबसे श्रेष्ठ नबी होते हुए भी इस बेवा वयोवृद्ध औरत से शादी करते हैं और उनकी मुहब्बत और इन यादों को ज़िन्दगी का हिस्सा इस तरह बनाये हुये हैं कि उनको महत्वपूर्ण वाक़आत व हालात में भी नहीं भूलते, उनके एहसानात को गिनाते नहीं थकते हैं और उनकी यादों की खुश्बुओं में लिपटे सुगंधित रहते हैं हालाँकि आप दुनिया वालों के लिये रहमत और मानवता के उपकारक हैं इस्लाम ने नारी को जीवन के हर मैदान में हिस्सेदारी दी लेकिन इसके साथ उसके खर्च दूसरों पर वाजिब किये उस पर किसी के खर्च की ज़िम्मेदारी न कानूनी तौर पर न शरई तौर पर नहीं लागू की। बीवी के नाते उस पर स्वयं अपना भरण पोषण (नान व नफका) भी फर्ज़ नहीं। बेटी है तो मुकम्मल ज़िम्मेदारी बाप, दादा, भाई, चाचा, मॉंमू, बेटों, भतीजों ओर पोतों की है यहाँ तक कि कानूनी और शरई तौर पर उस पर वाजिब नहीं कि वह दूध पिलाए लेकिन नैतिक तौर पर वह इससे भी बढ़ कर पति का हाथ बटाती है, उसकी सेवा भी करती है, घर संभालती है और पूरे घर घर की मालिकन नहीं बल्कि मालिका (महारानी) बन कर पति के सारे माल में भर पूर खर्च करने की भूमिका निभाती है और पूरे परिवार के सारे दुखों, कठिनाइयों, गमों और दर्द का उपचार भी करती है।

पवित्र कुरआन में सूरे रिजाल (मर्दों से संबिन्ध लेख) तो नहीं मगर सूरे निसा (औरतों से संबन्धित लेख) ज़रूर है। सारांश यह है कि औरत इंसानियत का दूसरा हिस्सा है। समाज की आधा भाग है या यूं कहिए कि ज़िन्दगी की गाड़ी के दो पहियों में से एक है इसके बग़ैर ज़िन्दगी की गाड़ी अपनी मंज़िल की तरफ जारी नहीं रह सकती है और इसके बग़ैर इन्सान की नस्ल चल नहीं सकती।

चिंता का क्षणः

औरत के हवाले से नफरत व पक्षपात आदि के जो आरोप मुसलमानों पर लगते रहे हैं, क्या यह केवल गैरों के षड़यंत्र और नफरतों का शाखिसाना है या इस में स्वयं मुसलमानों की इस्लामी शिक्षाओं से दूरी और दीन से व्यवहारिक रूप से दूरी और लापरवाही है इस पर

गंभीरता से गौर करने की ज़रूरत है। क्या यह हक़ीक़त नहीं है कि मुस्लिम समाज में भी औरत का अधिकार हनन होता है इसे मीरास से वंचित रखा जाता है। शादी में खर्च करने वाला शौहर माल, महर, नान नफक़ा और वलीमा सबका ज़िम्मेदारा था लेकिन अब तिलक व दहेज़ के नाम पर बारात और दूलहा के तोहफे के नाम पर औरत पर जो अत्याचार होता है इससे मुसलमान भी नहीं बचा है।

तिलाक़ व शादी में असंतुलन, शरीअत का असम्मान और इसमें मनमानी की जाती है और साधारण इस्लामी सिद्धान्तों की धज्जी स्वयं मुसलमान उड़ा रहा है। पवित्र कुरआन व हदीस जो हक़ीक़त में पूरी मानवता के लिये मार्ग दर्शन व रहमत का स्रोत हैं इन से जुड़ाव कितने लोगों की है? कितने लोग कुरआन व हदीस को समझते और पढ़ते हैं और इन पर अमल करते हैं? कुरआन व हदीस की सही शिक्षा अगर बाज समाजों और वर्गों तक पहुंच जाये तो एक वर्ग ऐसा भी है जो गैरों से ज़्यादा बदसुलूकी पर उतर आये गा उसे इस्लामी ग़ैरत और कलिमा की निस्बत का पास व लिहाज़ तो दूर की बात है इन्सानियत को भी भूल जाता और पूरी मिल्लत को शर्मसार कर जाता है हम से अल्लाह की रहमत यूं ही नहीं रूठी हुई है। विश्व समुदाय की सारी बुराइयों खामियाँ, खराबियाँ, अश्लीलताएँ जिनके सुधार व खातमे के लिये उम्मत पैदा की गई थी इसी में लिप्त है और इक़बाल मजबूर है कहने में:

यह मुसलमान हैं जिन्हें देख कर शर्माएँ यहूद

इसलिये भी ज़्यादा दर्दमन्दी और सख़्ती के साथ एक अरब कवि ने बहुत उचित कहा है:

काश मुझे मालूम होता कि अगर अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रूह बुलंदियों से हम पर नज़र डाले या झांक कर हमारी स्थितियों का निरीक्षण करे, तो क्या देखे और क्या राय काइम करे?

मेरा गलिब गुमान है कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आज हमारे दर्मियान आ जायें तो उन्हें भी इनही रवैयों और तलख़ियों का सामना करना पड़े जो मक्का वालों की जानिब से पेश आये थे।

हम ने उस नूर (सत्य) से मुंह मोड़ लिया था जिसे वह हमारे लिये ले कर आये थे जिस तरह कुरैश ने इस से मुंह मोड़ लिया था और हिदायत की राह छोड़कर भटक गये थे।

फिर मेरा मसलक लोगों के आम चलन के अनुसार कैसे हो सकता है? और न उस ज़माने के लोगों का मज़हब व तरीका मेरी मिल्लत और मेरी राह बन सकता है।

ऐ मेरी रूह तू इस बस्ती के लोगों में एक अजनबी मुसाफिर की तरह है इस लिये इन से जुदाई पर ज़्यादा हसरत न कर, अपना सफर जारी रख और गम व अफसोस में स्वयं को न खपा।

(जारी)

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उद्देश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के परिणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान

Posted On 24-25 Every Month
Posted At LPC, Delhi
RMS Delhi-110006
"Registered with the Registrar of Newspapers for India"

JUNE 2026
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस मंज़िल की तामीर व तकमील के सिलसिले में

सम्माननीय अइम्मा, खुतबा, मस्जिदों के संरक्षकों और जमईआत के पदधारियों से पुरजोर अपील व अनुरोध

अहले हदीस मंज़िल में चौथी मंज़िल की ढलाई का काम हुआ चाहता है और अन्य तीनों मंज़िलों की सफाई की तकमील के लिये आप से अनुरोध है कि आने वाले जुमा में नियमित रूप से अपनी मस्जिदों में इसके सहयोग के लिये पुरज़ोर एलान फरमायें और नीचे दिये गये खाते में रकम भेज कर जन्नत में ऊंचा मक़ाम बनाएं और इस सद-क़-ए जारिया में शरीक हों।

सहयोग के तरीक़े (१) सीमेन्ट सरिया, रोड़ी, बदरपुर, रेत (२) नक़द रक़म (३) कारीगरों और मज़दूरों की मज़दूरी की अदायगी (४) खिड़की, दरवाज़ा, पेन्ट, रंग व रोगन का सामान या क़ीमत देकर सहयोग करें और माल व औलाद और नेक कार्यों में बर्कत पाएँ।

Paytm UPI
9899152690@ptaxis

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. **629201058685** (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)
पताः-4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

Total Pages 28